

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st FEBRUARY 2019

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

पाँच रुपया

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै

कोशाधिकारि
के. विजयन

वाँगडी
प्रो. जी. मोउन राव

न्यायोपदेशक
अड.बी.एन. वसन्त कुमार

प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

मुखचित्र : 25.11.2018 के परलोक प्राप्त जल्लेली साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त केल्लेली डॉ. एल. सुनिता बाई हंका भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि ...!

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची

SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 8 | अंक : 2 | 1940 माघ

संपादकीय

सप्रेम नमस्कारु ।

अम्गेलो एकु संकल्पु अस्सिलो । ह्यो मासिकेंचे शम्बर अंकयि पांच रुपयानचि तुम्का पावोंव्का म्हळ्ळोलो । स्वल्प सग्ग कष्ट-नष्ट एय्ले जल्यारि सरि, तें देवाले दयेन सफल कोरूक जल्लेंचि । एक्केक मास वत्ता तस्सीचि, मासिका चड चड आकर्षक कोरूक अस्सिलो प्रयत्नूयि सफल जल्लो म्होण्का जत्तलें ।

तुम्का कळता ह्ये 100 मासानि कागताचे, प्रिन्टिंगाचे सग्ग मोल-खर्चु चड जल्या । इतर मासिका, पत्रानि सग्ग 2-3 फंता मोल चडोव्नु जल्लें ।

'स्पन्दन' सुचारु रूपेण मुक्कारि वोचूका जल्यारि मासिकेचे मोलयि चडोंव्का म्हळ्ळेले अनिवार्य जाव्नु एत्ता मू । दिकून एप्रिल 2019 थकून, एक प्रति - 10 रूपया, एक वर्षाक - 100 रुपया म्हळ्ळेले लेकान कोर्का म्होंणु अकादेमी भारवाह्यानि निर्णयु कळ्ळोलो अस्स । ह्ये कायराक तुम्हीयि सहमत अस्तले अनि सहकरण दित्तले म्होणूचि तँ अम्गेलोयि विश्वासु । ।। जय कोंकणी ।।

कोच्ची, 01-02-2019 सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

06-01-2019 रवीन्द्र भवन, सांखळी (गोंय) :- अखिल गोंय कोंकणी भक्ति संगीत महोत्सव आनी भजन सर्त घडेय्लें। आयोजक अस्सिले सांखळेचे अनि दिवचलेचे कोंकणी केन्द्र सेवा अनि सांखळेचे आस्थ संस्था, कला आनि संस्कृति खातें आनि सांखळेचे रवीन्द्र भवन।

06-1-2019 बाज़िलकेरि, मंगळूर :- कासरकोड चिन्ना हंगेले नेतृत्वारि विठ्ठल कुडुवा हंगेले घरकडे दवोर्नु "घर घर कोंकणी - 127" घडेय्ले।

14-1-2019 पणजी दूरदर्शन :- सांजे 4 वरांचेर कोंकणी कविता वाचन कार्यावळ प्रसारित जल्ली।

कोच्ची :- "स्पन्दन" मासिकेचे 100 वें अंकाचे आघोषानुबन्ध जाव्नु विधार्थियांक बगेक घडेय्लेले कोंकणी प्रश्नोत्तरी मत्सरान्तु प्रथम स्थान अनुचन्द्र ए. प्रभु, द्वितीय स्थान स्वरूप एस., तृतीय स्थान श्रेष्टा एस. शेणै, शान्तारां शेणै (कोंच्ची टी. डी. हाई स्कूळ) अनि श्रीलक्ष्मी जी. (फातिमा गर्लस हाईस्कूळ) हंका फाव जल्यां।

17-1-2019 इन्स्टिट्यूट मिनेझीस ब्रागांझा सभाघर, पणजी :- गोंय सरकार, राजभाशा संचालनालय 2016-17 चे भाशा पुरस्कार वितरण केल्लें। "ज्ञानपीठकार रवीन्द्र केळेकार कोंकणी भाशा पुरस्कार" गुरुनाथ शिवाजी केळेकार हंका दीव्नु सन्मानु केल्लो।

विश्व कोंकणी केन्द्र, मंगळूर :- कविता ट्रस्ट आयोजित 13 वें अखिल भारतीय कोंकणी कविता महोत्सवु घडोव्नु हळ्ळो।



पंडरिनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार - 2018

2018 वर्षाचे पंडरिनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार "कुडजाद्री वॅयरचि सौन्दर्यलहरी" ह्यो यात्राविवरणाक उषा आर. भट, कोच्ची हांका फाव जाल्या म्हणु संचालक जी. मोहन रावु जाणेयता।

गोंय सरकाराले रान विभागान 67 वें रानजीव सप्तक 2018 आघोषानुबन्ध जाव्नु घडोव्नु हळ्ळेले अखिल गोंय कोंकणी निबंध लेखन मत्सरांतु कुडचडे सर्वोदय हाईस्कूळांत सिकूची सानिका राजय पवार ह्यी प्रखम एय्ली।

आकाशवाणी अनि कोंकणी मंगळूरु आकाशवाणी :- 16.1.2019 क साहित्य अकादेमी 2018 चो युवा पुरस्कार प्राप्त विल्मा बन्टवाळ जाव्नु अभिमुख अस्सिलें। 20.1.2019 क "Konkani Series on Achievers" कार्यक्रमान्तु कासरगोड चिन्ना जाव्नु अभिमुख अस्सिलें।

संत केशवदासालि हितोपदेश कथा – 43

प्रो. वी. शिवानन्द भट,
पंचाब्जपुरम

अनासक्त राजा जनक

राजा जनक वैभवपूर्ण प्रासादान्तु निवास करतालो। थंगा रय्यालि पत्नी, धूव सीता अनी बान्धव राबताले। आन्तरिक रूपान अनासक्त देकून हिमालयावेले महर्षि तज्जेलगि येव्नु ज्ञान प्राप्त करताले। एक समयारि अनेक महर्षि अनी सन्त जनकाले दरबारान्तु आध्यात्मिक सभा-कार्यक्रमाक एकडे जल्ले। महर्षि याज्ञवल्क्य ज्ञानी जनाले हे महासभेक संबोधन कोरूक आयलो। तग्गेले प्रभाषणाचो समयु जल्लो जल्यारीयि तो राजा जनकाले आगमनाक राकूनु राबलो। थोडे महर्षि हें दिकूनु परस्पर पुसपुसेले, "महर्षि याज्ञवल्क्य रायाले आगमनाचि प्रतीक्षा कित्या करता ? रायु तका ज्ञायते धन दित्ता जाव्यात, तें दिकूनु अंकालगेन प्रतीक्षा करयता।"

महर्षि याज्ञवल्क्यान तंगेलो सन्देहु मनां केल्लो। ताणे हांका रय्यालें आध्यात्मिक महत्व मनां कोरनु दींव्का म्हणु लेकलें। ताणे अपण्याले योगबलान उज्जो निर्माण केल्लो अनी तो उज्जो संपूर्ण प्रासादान्तु व्याप्त जल्लो। ऋषिमुनिगण निज कर्मचारीसहित धांवचाक लागले। जनक महारायु मात्र याज्ञवल्क्याले प्रभाषण अयकूनु बेसलो। रायु संपूर्ण ध्यानारि अस्सिल्लो। आतां महर्षि याज्ञवल्क्यान रय्यालें ध्यान आकृष्ट कोरनु सांगलें, "हे जनक, तुगेले रवळराक उज्जो लागलो जाव्नूयिं, ऋषि-मुनिगण धाव्नु गेल्ले जाव्नूयि तूं दिक्कनावें ? रय्यान सुस्मित सांगलें, "हे लोकान्तु मिग्गेले जाव्नु कांयिं ना; हांव आत्मा अनी आत्माक लस्सूक जायना।" आतां याज्ञवल्क्यान निज योगबलान उज्जो दूरा केल्लो। सर्व ऋषि-मुनि आध्यात्मिक सभेन्तु पोरतून आयले। वैभवपूर्ण प्रासादान्तु राबता जल्यारीयि रायु अनासक्त म्हणु सर्वांक मनां जल्लें।

सन्देशः- मानव-मन अनासक्त जल्यारि तका इत्तेंयिं अस्सूयात अनी ताणे खंयीं राबयात। (प्रासाद - Palace)

कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर आयोजित प्रतिमास कोंकणी कविसंगमं 21 वें (विळम्बी-कार्तिक) 1.12.18 क, 22 वें (विळम्बी-मार्गशीर्ष) 5.1.19 क सुशीला टी. भट, कोच्ची हंगेले घरकडे दवोर्नु जल्लें। 23 वें (विळम्बी-पौष) 2.2.19 क ।

हें तुमका कळता व्हे?

कोंकण्यांगेले आचार-विचार

- सुशीला त्रिविक्रम भट, कोच्ची

"दायदीसु अथवा जन्म दिवसु"

लोकान्तुलें खंचे राष्ट्र काडून चोयल्यारीय थंगा सग्ग जनविभागूय मनुष्यांगेलो जन्म दिवसु आघोषान चमकयताय म्हुण मनांत करूक जत्ता. त्या कार्यांतु जाती-मत-वर्ण व्यत्यासु ना म्हळ्ळेलें सत्य ता. वर्षान वर्ष येंवचे जन्मदिस्सा पशी अति चंग रूपान मनावंचो तं चेरडालो "प्रथमलो" जन्म दीसु.

हंगा अमगेले भारतांतूय अस्सिल्लीं विविध मत-जाती जनंय तांगतांगेले आचाराक, विश्वासाक अनुसार जावनु चेरडुवांगेलोय, म्हलगड्यांगेलोय जन्म दिवसु आघोषु करून येत्ताय. साधारण रूपान अधिकय माताची वा जातीची जन जन्मु घेत्तल्ले मासांतुली तारीख (तिथ्यति) तां जन्म-दिसाक कडताय. जल्यार अमी कोंकणी जनय, वग्गळे एद्दे जन समूहय चेरडालें (म्हलगड्यालेय) जन्म मासान्तूलें "जन्म नक्षत्र" तां आघोषाक क़डताय. ह्याचि लेकान तां अम्मी जनां मरणा वार्षिकाक मरण पाविल्ली तिथी तां कडताय. जननाक नक्षत्रा लेक्कय मरणाक तिथियेचें लेक्कय म्हुण अर्थु.

गोवा कोंकणी अकादेमी अनि कुडचडेच्या कोंकणी कला अनि साहित्य केन्द्र हंगेले संयुक्ताभिमुख्यारि दुसरें कोंकणी नाट्य संमेलन 2 अनि 3 मार्चाक कुडचडेचे रवीन्द्र भवनान्तु जत्तलें।

अय्किल्लि रस्पति

बाय्ल - हाँव कितलि चंदि अस्स म्होणु संगायि, पोळोव्या !

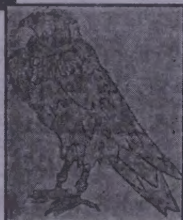
बम्मूणु - तूँ वे ? चंदि म्हळ्यारि चाँ चंदि !

बाय्ल - चाँ चंदि म्हळ्यारि कितलि चंदि ?

बम्मूणु - तूँ इतलि चंदि अस्स की, तुज्या असलि एक लगेन घरल्याक हाड्यां म्होणु दिसता !!

चेर्डुवांलि चित्रँ





कु. शिवराज एस. भट (16) । कोच्ची शिवानन्द आर. भट अनि सुजाता हांगेलो सुपुत्रु ।

संत कबीरदास दोहा -



एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"चिंता तो हरि नाम की, और न चित वै दास।
जे कछु चित वै राम, बिन सोइ काल की पास।।"

कबीर संगता हांव हरि नाम मात्र चिंतन करताँ। हें सोणु खंर्च वेग्गळ चिंतन करता, ती चिंतना कालाले बोल्या समान बंधन अनि मृत्यू हंतु फरकांवुचे मट्ट (लेकान) तॅ।

'स्पन्दन'चे शेंबरि अंक



- एन. माधव रावु, कोच्ची

2019 जनुवरि म्हय्न्यांतु
जल्लें मक्का (स्पन्दनाक) शेंबरि मास।
स्वागत संगता हांव कोंकणी जनांक
धन्यवाद संगता तुंचे सहकरणाक।।

अत्त मक्का अस्स बीस पत्रँ (पेज)
अंक अंकान तुम्ही दित्तायि पोषण।
तुमचे भरसी वडता हांव
मुक्कारीयि दींवका सहकरण मक्का।।

दुरगांवची खबर्यो, लेखन, भाषान्तर
गींत, ज्योतिष, काणियों, सुभाषितं।

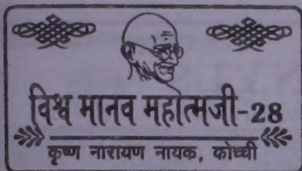
रस्पति, आळें, शब्द परिचय
कविता, स्मरणाञ्जली, पाचक परिचय।।

अज्जेलीं वोक्कद, आरोग्य पंक्ती
चेरडुवालीं चित्रं, चौपदि, परणि म्हणी।
नित्यकर्म, निषिध कर्म, आचार-विचार
श्राद्ध, व्यापाराचें परस्य इत्यादि विभवं।।

कोंकणी लिपीन देवोंची केरळान्तूली
एकीएकि मासिका 'स्पन्दन' मात्र।
कोंकणी मातेक सेव कोरूक
एकमेळेन वड्डूयां मुक्कारीयि अम्का।।

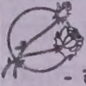
गोवा - कर्नाटक - केरळ
आवय - आवसु - अम्मा
बापूय - बप्पूसु/ आनु - बप्पा/ अप्पा

कोंकणी खबरेक चोय्यायि/पळेयात
facebook
कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर



"एक नवे उत्राचें रूपांकन"

सत्यान्तु सुदृढ राबूचे मनोगतीन गान्धीजीयी अनुयायीयी सन्त सन्त समर्थ आनि संघडित जावनु प्रबल जाले। त्या नवीन प्रतिरोध उपाधीक तन्नी कसलेंय नामकरण जावो केल्लेना। जल्यारीयि विमुखतेन प्रतिषेध म्हळोलो अर्थु एंवचे लेकान 'पेसीव रसिस्टेन्ट' म्हुण ताका संबोधन कर्तालीं। ब्रिटीषांले अनीतीक विरोध जार्णोंका, प्रतिषेध दर्कोंका म्हळेले बगेक वेन्चून कळ्ळीलि वाट ती अस्सिलि। एक कार्यान्तु गान्धीजीक निर्बन्धु खण्डिप अस्सिलो - अपण जावो अनुयायी कोण जावो एक्क कारणानयी आक्रामक जांवचाक नज, आक्रामक हादि अपणावुंचाकयि नज। भारताचे भारतीयांले अवकाश अधिकार ब्रिटीषांकर्यान पर्तून दिवौन्नु ताका अंगीकार आदर करौंचाक वायट वाट केदाण नाका। थोगडे वेळेरि त्या खातिरि मस्त सहन कोर्का जांवचाक पूरो, मरण वरण कोर्का जांवचाक पूरो, तवळीय क्रोध वैर्य एक पसावतय फूटून फप्पेंवचाक पाणा। त्या दोषान्तु बुडतल्यांलि मत्तिं बुद्धि मन्न देह आरोग्य आयुष्य तं वोगी जर्जर, फण्ण जत्तलें। अल्तान्तु प्रहार कर्तल्याचेरीयि पेल्तान्तु स्नेहु उदेंवका। थोगडे बलवन्त क्रूर, दुर्बल जनांचेरि अनीति उस्सितले। तें एक प्राकृत प्रकृत तं। तें बलाचे मुष्क तं। ते चिन्तेन्तु अन्ध आनि अविवेकि तं अस्तले। भारताचे स्वातंत्र्या खातिरि जीवार्पणाक असंख्य जनावर सन्नध जाल्यां म्हुण ब्रिटीषांक दिस्सूक आरांभिल्यारि पूरो.... नन्तना रगत निस्तांवचाक जावो प्रतिकार पीडा दिंवचाक जावो न्हंय मुकारि सोर्का। अपक्व अन्यायपूर्ण नेम पालनाक जोर गालतायि जल्यारि एकमेळनु खुल्ला तिरस्कार कोर्का, क्षोभ नात्तिलें शान्त राबूका। सहनान विरोध विमुखता विरक्ति वैराग्य प्रकट कोर्चे त्या नवीन रीतीक एक नवें प्रभावन्त पद-शब्द आविष्कार कोर्का म्हुण गान्धीजीक तवळि दिस्सलें। अनुयोज्य नांव दिकून दर्तल्याक उचित पुरस्कार प्रदान कर्तालीं म्हुण उद्‌घोषण जालें। गान्धीजीलो एक युवबन्धु मगनलाल गान्धीजीन पेटैलेंले नांवाक पुरस्कार प्राप्त जालो। तान्तु गुप्त अस्सिले आशय व्यक्त कोर्नु गान्धीजीन तें चिके लगेन पुष्कळ-प्रौढ केल्लें-तस्सि तं "सत्याग्रह" म्हळेलें उत्तर उद्‌भव जालेलें। तें सगटांक रुचवलें, चोवु भित्तरि सर्वत्र प्रचार पावलें मात्र न्हंय मगीरि विश्व प्रसिद्ध लगेन जालें। ❀



समत्व

- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

स्त्री पुरुष भेद भाषेन्तु अस्स
वीक्षणान्तु पोडचे ह्ये वेषान्तु अस्स
कर्म कोरचे ह्ये क्षेत्रान्तु अस्स।
व्यत्यस्त तांगेले गुण स्वभावु
विङ्गड वस्तूंचेरि लगता लावु
वग-वगळे वट्टेरि मनाचो धांवु।
चड बळ ददल्यांक व्होड शरीर
ददल्यांचे पशि चड बायलांक विकार
ऊँच खाल वत्ता तुलास ह्ये प्रकार।
प्रकृतीय पुरुषूय जांवका सृष्टि कोरूक
सग एक सम जल्यार जांवना मुक्कार सोरूक
नर आनी नारी एकमेकालिं पूरक।

चौपदी

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची

चांग चोंव्याक देवान दिल्ले दोळे
चांग अयकूक देवान दिल्ले कानॅ
चांग उल्लोंव्याक देवान दिल्लि जीब
चांग कर्माक देवान दिल्लो जीवु।।



वेंकट गिरिवासा

- के. अनन्त भट्ट, कोच्ची

वेंकट गिरिवासा जय वेंकटेशा !
पंकज लोचना राक रमेशा।
कलियुग वरदा, शंख-चक्रधारि।
पालन करि आमकां विष्णु मुरारी।।प.।।

अभय दिवचे तुझे वरद ते हाथ।
सभय शरण आमकां करिं तूं सनाथ।।
भव सागरांतु ह्या तूं आमकां शरण।
केवल आश्रयु तें तुगेलें चरण।।1।।

देवु तूं भक्तांक रक्षण करचो
जीवनांतु सग सौभाग्य भरचो।।
दवरि देवा तूं दयेची दृष्टि।
जीव जग जाल सग तुगेली सृष्टि।।2।।

परम दयालु तूं भक्त हित कारी।
दुरित निवारण करि तूं धरारी।।
प्राणियांचो सर्वांचो तूं सूत्रधारी।
म्हणता अनन्तु तूं भवभय हारी।।3।।

कीरु आनि सून



- पी. एस. प्रदीप, कोट्टयम

कीरा हांवय तूवय एक समान रे
हांव हांगाचि सून.
तू हांगाचो अपुरबाये कीरु
तुका खाण दित्ता; तरातरांचें
फळ दित्ता, अपुरबायेन
माकाय तसीचि.
तुगेले घूडा दरवटो सदा बंध केल्या
जाल्यार; बंध कोरनत्तिले घरान्तु
तुजे मादरीन रे हांव.
तुका उब्बू आशा ना वे ?
करमलि रुकावेलि खुश्शालि आयकूक
वाँवट ना वे ?
तसीचि माकाय आस आशा तरातराचीं
घरकारानि सिकेयलेने पद तू सांगता
तसीचि माकाय साँगुका जाता
"तत्तम्मे पूच्चा..... पूच्चा"
तजो अर्थु कित्तें ?
ते कोणाविशीं सांगता ?
माका कळता; तरी परतून सांगु जायना.
तसी तूवय हांवय सम/ एक.
तुका घूडान्तु घल्लें तवळि थकूनु
भाका ताली मांदिल्ले दीसु थकूनु
स्वातन्त्र्य ना.
कीरा, आनि अम्गेले जीवितान्तु
सूर्योदय केद्दाणरे August पंदराचो ?
कीरु :- शाश्वत न्हय ही अवस्था,
पावतोलो तो दीसु -
वाट पोळोव्नु बेस
क्षमेन, श्रद्धेन. ✱

आदगति गुंतिले काव्यमाला

- नागेष अण्वेकर, कारवार

भरीली मुष्ठी लाखाची
सोडीली मूँट अतंत्र
सावळि उरता अमचे फाटल्यान
बरे वायट करणि आमचे फाटल्यान
बरे करणि सदा हितकारि
वायट मार्ग राकून आसा दुर्मार्गी

एक प्रयोजनप्रद कोंकणी वेबसैट :
konkaniwordnet.unigoa.ac.in

अविवेक बुद्धि आपत्ताक कारण

- ए. आर. प्रभु, कोच्ची

एक फंता एक गुरून तगेले शिष्यांक जीवु प्रदान कोरचो एकु मन्त्रु शिक्केय्लो। अनि संगीलें, "यो मन्त्रु विवेकपूर्वक जांव्का प्रयोग कोरूक" म्होणु। एक दीसा तीं शिष्य रत्रान्तुल्यान वत्तना एक वागालें मृतशरीर दिक्कीलें। एकलाक एकि कुसृति दिस्सलि। यो मन्त्रु एक परीक्षण कोर्का म्हू, सम्म वे की न्हय म्होणु चोंव्का म्हू ? तो ते वागाले मृतशरीरारि तो मन्त्रु प्रयोग कोरूक गेल्लो। इतर शिष्यानि अड्डार्य्लें, "नक्का ! नक्का!" म्होणु। तो आयकूक तय्यार ना। इतर शिष्य थंगा थकून धाव्नु गेल्लीं अनि एक रुक्कारि चोणु बेस्सलिं। ये शिष्यान तो मन्त्रु म्हळोलोयि वग्गाक जीवु एयलो। ताणे उडकि मार्नु ये शिष्याक दिंसि मार्नु खेल्लो।



जातलो फार

सुनिल पालकर, नावशी - गोंय

भोवसा शेपडेक बांदला फुगेट
जातलो फार जातलो फार
रंभा सरल्यो आंगणा भितर
सांतेरीचो येतलो भार

जाणट्या दादीन घाल्लो धकटो
मुंबरा भित्तर धुंवरेता
काळजा मळ्यात आंब्या रुखार
इंगळ्यां चंवरां चंवरता
सुर्याच्यां क्रांती विरांक
भितर सरुंक उकतें दार

पालवल्लें चुडी भितर
अजून इल्लें उरलां त्राण
मात्सो फूंक मारल्यार लेगीत
पुरो जातलों पेटोंवक रान
अज्ञानाची चिरफाड करून
उजवाडाचें येतलें ल्हार
गांव धनी गांवकारान
दर्या पियेवन पचयला
न्हिदूंक गेल्ल्या मड्याक लेगीत
मसणीतल्यान उठयला
इत्सा शक्ती आसा जिती
अजून कोण जावकना ज्यार



बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - उषा आर. भट, हैदराबाद

सामग्री

1. पिक्कल्ले पोण्साचि चांग पुष्ट विक्कण्ड*	- 50	4. सब्बू ओरोवु	- 50 ग्रां
		5. एळु	- 5
2. गुड	- ½ कि.	6. काजूबीयेचे कुटके	- 50 ग्रां
3. नरलाचि सोयि	- 1 नरलाचि	7. किसमिस	- 25 ग्रां

बिक्कण्ड सालि काणु, खरवोड्डु काणु, चांग कोर्नु सिज्जोव्नु काडका। वन्नान्तु घाल्नु वट्टूनु पीट कोर्का। गोड, उदकान्तु मेळसाव्नु, रेंव, कोयरु अस्स जल्यारि पॅर घाल्नु, खतखतांवका। तन्तु पीट रक्कोंव्का। नरलाचि सोयि वट्टूनु रोसु काडका। दाटु रोसु काणु विंगडॅचि दोव्वोर्का। दुस्सरचो रोसु घाल्नु चांग प्रमाणि मिश्रण कोर्नु खतखतांका। तन्तु सब्बु ओरोवूयि धूव्नु घालका। तुप्पान्तु भज्जूनु काजूबीये कुटकेयि, किसमिसॅयि घालका। नरलाचे दाट दूध रक्कोव्नु एक लगेन खतखतो काणु, रणनीरि सुकूनु देवोव्नु, एळु धड्डाव्नु घालका।

(चांग पिक्कल्ले तिळवो पोण्साचे बिक्कण्ड तँ उत्तम)*

सुभाषित

प्रो. के.एन.आर.भट
कोच्ची

"त्यागः शौर्यं तपः शक्तिः सत्यं धर्मो दमः शमः
शीलं शौचमिति प्रोक्ता यशसो दश योनयः।।"

- राम चरितम्

इतरांगेले चंगपणा खत्तिर करचो त्यागु; धर्म रक्षणाक दक्कोंव्चे शौर्य, ब्रह्मज्ञान झोड्डूक कॅरचें तप; बाह्य अनीक आन्तरिक (शारीरिक आनी आध्यात्मिक) शक्ति; लौकिक व्यवहारान्तु सत्य पालन (तन-मन-धन-वाक्); अपण्यालो वर्णाश्रम धर्मु पालन; इन्द्रियांचेरि आत्म नियन्त्रण; इतरां ओट्टु करचे कारोबारान्तु कर्म वैशिष्ट्य; सत्स्वभावु, स्वच्छ शुद्ध वस्त्र धारण; उत्तरान्तूयि प्रवृत्तीन्तूयि नैर्मल्य; शरीर परिशुद्ध (दुर्गन्ध रहित) जाव्नु पालन करचें; ये धा गुण तॅ एक मनशाक विजयु आनी सत्कीर्ति मेळचान्तु सहायक जत्ता।



देवादिदेवा

- लता रंग मल्लन, माळा

देवादिदेवा हे वासुदेवा
नमन तुक्का नमन तुक्का
नमन तुक्का गोपाला (देवा)
नन्दनन्दन बाला इन्दुवदनलोला
कालियनर्तना कंसमर्दना
कमललोचना देवा
करुणासागरलोला (देवा)
लोकांक सर्वयि तू लोकबन्धु
दीनजनांक तू दीनबन्धु
साधुजनांक तू स्नेहबन्धु
अनाथांक तू अनाथबन्धु (देवा)
आराध्यपुरुषा देवा
आह्लाददायका देवा
आश्रितवत्सला आपल्बान्धवा
अनाथनाथा देवा
अद्‌भुतपुरुषा देवा (देवा)
सत्यस्वरूपा श्रीकृष्णा
सद्‌गुण नायका श्यामा
शान्तस्वभावा देवा
शरणागता यो देवा (देवा)



नाटक गान

सुरेश वी. शेणै, कोच्ची

अम्मा... अम्मा... अम्मा...
कस्सलें दुर्भाग्य मिज्जे अम्मा
अनि हांवे कस्सि तें संगचें ?
रक्तबन्धाचो आत्माचो जीवाळो
इत्याक नाशु तूं केल्लें ? अम्मा....
इत्याक नाशु तूं केल्लें ? (कस्सलें)
स्वप्न दिक्किल्लें पुण्य गर्भान्तु
उत्तम मानव जन्मु
हांवे मन्दिल्ले भंगराचे रवळारॅ
इत्याक धूळि तूं केल्लें ? अम्मा...
कोणाक जाव्नु तें केल्लें ? (कस्सलें)
सुकृताचें फलॅ पूर्वजन्मांचें
भोग्गूक हांव भूमीरि एवंचें
आत्माभिमानु तो मनान्तु भोर्नु
इत्याक चिक्लान्तु घल्लें ? अम्मा...
तज्जान कस्सलें मेळ्ळें ? (कस्सलें)

अष्ट लक्ष्मी 1) आदि लक्ष्मी 2) धन लक्ष्मी 3) विद्या लक्ष्मी 4) धान्य लक्ष्मी 5) धैर्य लक्ष्मी 6) संतान लक्ष्मी 7) विजय लक्ष्मी 8) राज लक्ष्मी ।

आवसु



- वसन्तकुमारी पी. एस., कोच्ची

रामचन्द्रालो बप्पूसु सत्र प्रायेरि गेल्लो। मगीरि तक्का वड्डेयलोलो तग्गेले अवसून तँ। ती लगी घरवन्ताक वोंच्चूनु काम कोरनु तक्का व्होळ्ळो केल्लो। तो सिक्कूक बहु दष्टीकु। तीणे तक्का एम.बी.बी.एस्साक बोळोव्नु तो चांग उच्छ रीतीरि जिक्वलो। लगी गाँवान्तु कामय मेव्ळें। तग्गेले अम्माक एकु दोळो ना। ते दिक्कूनु तक्का अवसूक तगेले ओट्टु रवोव्चाक लज्जा। एक कोटीश्वराले धुव्वेक ताणे व्हर्डीक केल्लि। तवळीयि ताणे अवसूक कॅळेयलेना। चांग काम मेळ्नु तो बयलेकयि घेव्नु विदेशान्तु गेल्लो। वच्चे मुर्थम एक स्थापनान्तु भरी दुड्डु दीव्नु ताणे अवसूक थांगा रबेयलि।

एद्दे काळ गेल्ले। अवसूक तीरे (चाँ) नज्ज म्होणु तक्का विवोरु कॅळेय्लो। तो उब्वूनु गाँवान्तु एय्लो। जल्यारि आवसु तक्का चोव्नु रब्बीलेना। ती बवडी देवाली जल्ली। वच्चे मुर्थम पुत्ताक तीगे एक वर्प वोरोव्नु दवरलेलें - "अरे पुत्ता, एकु दोळो मात्र अस्सिल्लि अम्मा तुक्का अभिमानाक उणावु जल्ली जल्यारीयि एकु दोळो मात्र जल्लोलो मिग्गेलि चूकि न्हयि। तू जन्मु घेवचानीक तुक्का एकु दोळो ना अस्सिलो। ते चांग न्हयि म्होणु हांवे मिग्गेलो एकु दोळो तुक्का दिल्लो। तश्शि तं मक्का एकु दोळो जल्लोलो। अत्तं पुणीयि मनान्तु करी।" ते वच्चूनु ताणे खोण्से काणु रोडूक आरांवीले। एक दोळो ना जल्यारीयि, कुर्डि जल्यारीयि अम्मा अम्माचि न्हयि वे ? ते ताणे मनान्तु केल्लेना। आवसु आवसू तँ। चेरडाक जाव्नु जीवु सरि दित्तली। अम्मा, दिक्कूक एंची देवी तं।

कोंकणी प्रसारण - आकाशवाणी कारवार : (सग्ग विरेस्ताराचे सन्जे 5.00 - 5.30)
धारवाड (765 Khz) MW: (सग्ग सोमाराचें रत्ति 10.00 -10.30 जाई-जूई कार्यक्रमु)
तृश्शूर (630 Khz) MW, कोपिकोड (684 Khz) MW : (मंगळाराचे संजे 5.00 धोर्नु 5.15 पर्यन्त)

रस्पति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

दम्मोलि दिनेशु - डॉक्टरमामु, भारतरत्न - ना पद्मश्री ना पत्मभूषण मेळूक इत्ति कोरका ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, वखद दित्ता। दुसरीय येससीले व्यामोह येत्ता जल्यारी 'शोक-ट्रीटमेन्ट' जांका जात्तले।

* * * *

गुर्भिणि गोरोजिनि : डॉक्टर, मजे पोटान्तु वाडूचे चेर्डुं चेल्लो की चेल्ली ?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, लक्षण दिक्कून दोन्नीकय साध्यता आसा। इत्ति जल्यारीयि बंपर म्होणु लेकल्यार पूरो।

'मळबाक अड्डोळचे
लेक्कान वड्डता रूकु।
जल्यार कायळ्याक
बेसूक जायनामू !'

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

शुभोद



परणी म्हणणी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

* दुक्कीचो पायु, अडळचो चडु।
* दुक्की, भोगतल्यांक कळता।
* दुक्की,सगटांक एक्कॅ मट (एक्कॅ लेकान)
* दुसर्यांक दुकेयल्यारि
अपण्याक सुख मेळता वें ?
* दुसर्यांक दिल्लेले दुःख
पर्तून मेळता खण्डित।।

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम., कोच्ची

ॲव्सॉल्लि/ल्ले/ल्लो - യോജിച്ച / പറ്റിയ ഒത്തിണങ്ങിയ - Suitable

सज्जपॅ - ചേരുക - To match

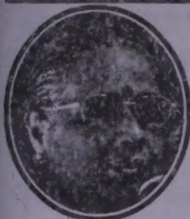
सॅमॅ (सॅमॅचि) - ശരി/തുല്യം/മുമ്പിൽ - Correct/ Equal / in front of

सम्मर्गणि - ശരിയായി - Correctly

सर्कें - ഛായ - Resemblance / likeness

थेट - അതേപടി/അച്ചിട്ടത്/സൂക്ഷ്മം - Exactly

डॉ. एल. सुनिता बाय (1944-2018) - गौश्रीपुरम हरिकुमार



कोच्ची आर. लक्ष्मण शेणै अनि विमला हंगेलि धूव जाव्नु 24.5.1944 क जन्मु। विद्याभ्यासु कोच्ची टी. डी. हाई स्कूळान्तूयि, एरणाकुळम महाराजास कोळेजान्तूयि। बी.ए. (संस्कृत), एम. ए. (हिन्दी) अनि पी.एच.डी. केल्यां। अणकारां विशीं सर्टिफिकट कोर्स पूर्ण केल्यां। 8.11.1973 क अडॅ. वी. बालकृष्ण शेणै हत्रीयि जाव्नु व्हर्डिक जल्लि। कोच्चीन सर्वकालाशालेन्तु हिन्दी विभागान्तु काम करतालि। हांका यू.जी.सी. जूनियर, सीनियर रिसर्च फेलोशिप, संशोधना खातीर कोंकणी-हिन्दी-मलयालम कोश तैयार करचाक केरियर अवार्ड (1983-85) अनि हिन्दी-कोंकणी लोकसाहित्य का तुलनात्मक अध्ययन (सांस्कृतिक पृष्टभूमि के संदर्भ में) विषयाचेर शोध करूंक यू.जी.सी. मेजर रिसर्च प्रोजक्ट फाव जालें। हिन्दी, कोंकणी, मलयाळम भाशांच्या आनी साहित्यांच्या तुलनात्मक सोदच्या मळार हांणी 16 शोध विद्यार्थ्यांक मार्गदर्शन केल्यां।

हंगेले 25 ग्रंथ उजवाडाक एय्ला। मुख्य म्हळार "कोंकणी-हिन्दी-मलयालम कोश (शब्दों के स्रोत एवं अँग्रेज़ी अर्थ सहित" (Cochin University of Science and Technology 1987 न्तु प्रकाशित)। ते शब्दकोश (Dictionary) सदा सगटांकय प्रयोजनप्रद जाव्नु अस्स, अस्तले। 25 वें पुस्तक "रंगोली" (कोंकणी कविता संग्रह)। हांका 2005-06 वर्साचो भारतीय अनुवाद परिशदाचो "डॉ. गार्गी गुप्त द्विवागीश पुरस्कार", 2011 क अणकाराचें विशीं (केन्द्र) "साहित्य अकादेमी पुरस्कार" (महाकवि गोंविन्द पै) अनि 2013 क "गोवा कोंकणी अकादेमी पुरस्कार" (शंखनाद-कविता संग्रह) फाव जल्ला।

तंगेले जीवितान्तुलो चाँगु एकु वण्टो कोंकणी भाशेचे खातीर जाव्नु सदुपयोगु केल्या। 25.11.2018 क, 74 वर्ष प्रायेरि दिवंगत जल्लेले तंगेलो उडगासु सदा अस्तलोचि। ❑

साहित्य अकादमी अनि कोंकणी ● 12-13. डि. 2018, गोंय :- सी.ई.एस. कला आनी वाणिज्य म्हाविद्यालय, कुंकळ्ळी, साश्ट-गोंय आनी साहित्य अकादेमीचे संयुक्ताभिमुख्यारि 'कोंकणीतलें आदी साहित्य आनी समाज दर्पण' राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित केल्लें ।केरळ्चे प्रतिनिधि आर. एस. भास्कर अस्सिले ।

● 17.12.18 गोंय :- साहित्य अकादेमी, गोवा कोंकणी अकादेमी आनी पार्वतीबाई चौगुले महाविद्यालय, मडगांव, हंचे संयुक्ताभिमुख्यारि 'युवा स्पंदन' 'युवा कोंकणी साहित्य 2000 से 2018' कार्यक्रमु जल्लो ।

● 23-24. डि. 2018, कविवर्य कुसुमाग्रज मराठी भाषा भवन, मुंबई विश्वविद्यालय, कलिना, मुम्बई :- साहित्य अकादेमी, शाहीर अमरशेख अध्यासन, लोक कला अकादेमी, मुंम्बई विश्वविद्यालय अनि डॉ. रा. चिं ढेरे संस्कृति संशोधन केन्द्र हंगेले संयुक्ताभिमुख्यारि "पश्चिम भारतीय आदिवासी साहित्य" संगोष्ठी घडेय्ली । कोंकणी प्रतिनिधिं अस्सिल्लीं - तानाजी हलर्णकर, पी. के. कांकर, जोए फर्नांडीस अनि कांता गावडे ।

● 29.12.18 गुवाहटि बुक फेयर ग्रौण्ड, गुवाहटि, आसाम :- 29, 30 डि. 2018 दिस्सांकडे साहित्य अकादेमी अनि पब्लिकेशन बोर्ड, आसाम हंगेले संयुक्ताभिमुख्यारि जल्लेले "All India Young Writers' Meet" न्तु "Why do I Write ?" म्हळेले विभागान्तु कोंकणी प्रतिनिधि स्नेहा सबनीस अस्सिल्लि ।

पुस्तक प्रकाशन ● "भुरग्यांची पांयजणा" - वासंती काकोडें

● 5.1.2019, पुलीस क्वार्टर्स, आल्तीन, गोंय :- "ओस्सय कार्नवाल" (नाटक) - महेश चंद्रकांत (अभिनय, पणजी हे संस्थेचो पयलो वर्धापन दीस सुवाळ्यान्तु दवोर्नु प्रकाशन जल्लें । तंगेलेचि "आलतडचें पिशें" नाटकयि खेळेय्लें ।)

Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 8 Issue No. 2
Rs. 5/- No of Pages: 20 **SPANDAN**
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI

Registered KL/EKM/732/2018-20
Licence No. KL/CR/EKM/WPP-22/2018-20
Licensed to Post Without Prepayment
Date of Posting 10. 02. 2019

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and
Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph: 2350960 and
Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682 002. Editor - Suresh A. Shenoi